विद्याभवन ,बालिका विद्यापीठ , लक्खीसराय
रूपम कुमारी, वर्ग-दशम् , विषय-हिन्दी ✍.
दिनांक- २८/६/२०.

|| अध्ययन-सामग्री ||

बच्चों, आज का दिन आपके द्वारा व्यतीत किए गए हर दिन की अपेक्षा शुभ एवं आनंददायी हो ।.

आज की कक्षा में हम आपके क्षितिज पाठ्य-पुस्तक के पाठ -११

बालगोबिन भगत (रेखाचित्र) की चर्चा करेंगे । इस पाठ के लेखक – रामवृक्ष बेनीपुरी हैं ।.

: लेखक-परिचय:. रामवृक्ष बेनीपुरी का जन्म बिहार में मुजफ्फरपुर जिला के बेनीपुर गांव

में1899 में हुआ ।उनके माता पिता का निधन बचपन में ही हो जाने के कारण इनका जीवन कठिन परिस्थितियों से गुजरा । 1920 ईस्वी में राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम में सक्रिय हो गए ।

प्रमुख रचनाएं :

तरुण भारत ,किसान, मित्र, बालक, युवक योगी ,जनता ,जनवाणी ,नई धारा इत्यादि । खंड साहित्य के रूप में बेनीपुरी रचनावली प्रकाशित हुआ ।

- उपन्यास-पतितों के देश में
- कहानी -चिता के फूल
- नाटक -अंबपाली
- रेखा चित्र - माटी की मूरतें
- यात्रा-वृतांत-. पापों में पंख बाँध कर

- ***संस्मरण - जंजीर और दीवारें ।***

ये तो लेखक परिचय है । अब आपको रेखाचित्र से परिचित होना है ।

रेखाचित्र:. रेखा चित्र कहानी से मिलती-जुलती साहित्यिक विधा है । इस विधा में किसी व्यक्ति या वस्तु के रूप- गुण उसकी विशेषता , उसके हावभाव , उसके क्रियाकलाप को शब्दों के द्वारा इस प्रकार अंकित किया जाता है जैसे कि वह कोई चित्र हो उसे ही हम रेखाचित्र या शब्द चित्र कहते हैं ।

पाठ -भूमिका:. इस रेखाचित्र के जरिए लेखक में एक ऐसे विलक्षण चरित्र का उद्घाटन किया है जो मनुष्य लोक-

संस्कृति और सामूहिक चेतना का प्रतीक है । वेशभूषा या बाह्यअनुष्ठानों से कोई संन्यासी नहीं होता । संन्यास का आधार जीवन के मानवीय सरोकार होते हैं । बालगोबिन भगत इसी आधार पर लेखक को सन्यासी लगते हैं ।
यह पाठ सामाजिक रूढ़ियों पर भी प्रहार करता है । इस रेखाचित्र की एक विशेषता है कि बाल गोविंद भगत के माध्यम से ग्रामीण जीवन का सजीव चित्रण देखने को मिलता है ।

मुख्य-पात्र: पाठ के मुख्य पात्र बालगोबिन भगत हैं जो एक स्वभाव से ही सन्यासी हैं और उनका मानना है कि ग्रस्त जीवन जीते हुए आंतरिक रूप से

विरक्त व्यक्ति ही सच्चा सन्यासी होता है ।

शेष अगली कक्षा .... 🌷🌷🌷🌷

दी गई सामग्री को ध्यानपूर्वक पढ़ें और सुंदर अक्षर में अपनी कॉपी में लिखें ।.

🍂🍂🍂🍂🍂🍂🍂🍂🍂🍂